

## चित्र विरह वणकार ::-

गुर रामदास पुरि रटन जी, साईअ सिक लगी ।  
 जिते हरि कीर्तन जी, अखण्ड जोति जगी ॥  
 सोनो मंदिरु सतिगुर जो, दिसी प्रेम मति पगी ।  
 जानिब कयो जुहारिड़ो, आनंद उर उमंगी ॥  
 सरोवरु सुधा सां भरियो, दिसी दिलि तगी ।  
 आशीश वठी सतिगुर खां, बुखिड़ी सभु भगी ॥  
 गीत .बुधी गवइयनि जा, दिलिबर दिलि ठगी ।  
 रोम रोम रस सां चयो, जीए श्री जू अमां सगी ॥  
 गुर नानक जे गोदि में, दिठी आर्यनि अमड़ि अगी ।  
 हणनि खुशीअ सांगु खगी, गरीबि श्रीखंडि गदिजी ॥

( ११३ )

अबल उन्हीअ उमंग में, अची कयो आरामु ।  
 सुपिने में साई दिठो, साकेत जो सुखधामु ॥  
 गहिवर गंगा पुलनि ते, श्री वैद्यलि जो विश्रामु ।  
 साई बि सहिचरि रूप में, परियां करनि प्रणामु ॥  
 खेलनि लव कुश लादिला, हिकु गोरो ब्रियो श्यामु ।  
 श्रीराम कथा जे गान सां, जपिनि पिया सियारामु ॥  
 जसड़ो जानिब जो .बुधी, जलु वहाईनि जामु ।  
 मांदी दिसी मैथिलि अमां, साईअ चयो सतिनामु ॥

भुली सुधि शरीर जी, गाईनि क्यास कलाम ।  
 कीअ पहुँचाया प्रीतम वटि, श्री प्रियलि जा पैगाम ॥  
 अचानकु आयो उते, आनन्द कन्दु अभिरामु ।  
 मिलियो श्री मैथिलि चन्द्र सां, रस निधि राजलु रामु ॥  
 सदिङ्गो करे साईअ खे, गोदि कयो घनश्यामु ।  
 ब्रचिड़ी थीउ न मांदिड़ी, असी मिलिया रहूं मुदामु ॥  
 प्रेमियुनि जे लाइ था करियूं, नितु लीला ललित लालमु ।  
 अबल दिनी आशीशिड़ी, प्रभू थीदव पूर्ण कामु ॥  
 खावंद दिनो खुशियुनि जो, मूं अबालिणि इनामु ।  
 आज्ञा कई अबल खे, तदहिं सुन्दर श्याम ॥  
 हिन समाज दर्शन में, रहु राजी आठों याम ।  
 गाइजो नितु गुण ग्राम, गरीबि श्रीखण्डि गुणनिधी ॥

( ११४ )

असुर आशा वार ते, जागियुमि सन्तु सुजानु ।  
 आया अमृतसर जे, साई करण सनानु ॥  
 दुबिड़ी दिनी तलाव में, मिठे मालिक महिरबान ।  
 कपिड़ा करे कण्ठे ते, वेठा मंझि ध्यान ॥  
 सवा पहरु सिज जो चड़िहियो, जागियुमि तदहिं जुवानु ।  
 कणाहु खाराए गुरूअ खे, पोइ कयो जलपानु ॥  
 बाबलु घुमें बाजारिड़ी, सूफियुनि जो सुलितानु ।  
 चोखो चित्रकार हुओ, तंहिखे अबल कयो फुर्मानु ॥

दिलि घुरी रचिना करीं, तोखे दिर्युं दुहिरा दान ।  
 चित्रकार चयो चाह मां, थियां कदमनि तां कुर्बानु ॥  
 मुहिंजी छा मजाल आ, तवहां कृपा करे कल्याणु ।  
 सारो रस समाजिडो, तद्रहिं बाबल कयो बयानु ॥  
 चित्रकारु बि चतुरु हुओ, होसि देवीअ जो वरदानु ।  
 रचना कयाई रस भरी, जिअें साईअ चयो सिक सांणु ॥  
 दिंसी दृष्य मन भावंदो, भुली वयो सभु भानु ।  
 साईअ कयो सन्मानु, चडो चित्रकार जो ॥